# स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान में आधुनिक चेतना के निर्माण में अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र के समाचार पत्रों का योगदान (नवज्योति के विशेष संदर्भ में)

द आई.आई.एस.विश्वविद्यालय मे शोध पंजीकरण हेतु–


**शोध निदेशक**
डॉ. शरद राठौड़
विभागाध्यक्ष इतिहास
द आई.आई.एस. विश्वविद्यालय,
जयपुर

**शोधार्थी**
विजयश्री शर्मा

## प्रस्तावना :—

पत्रकारिता न केवल समाज को प्रतिबिम्बित और अभिव्यक्त करती है वरन् बहुधा तत्कालिन समाज को एक दृष्टि और दिशा भी देती है। आधुनिक विश्व में पत्रकारिता अपने प्रारम्भिक काल से ही समाज की दिशा तय करती रही है। आधुनिक पत्रकारिता का उदय लगभग 300 वर्ष पूर्व अमेरिका मे हुआ और 'बोस्टन न्यूज लैटर' तथा 'न्यूयार्क गजट' जैसे पत्रो ने अमेरिका में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध आवाज बुलन्द की। थॉमस जैफरसन ने अपने एक लेख में यह स्वीकारा है कि अमेरिका का एक आधुनिक धर्म निरपेक्ष राज्य के रूप में उदय तत्कालिन पत्रकारिता के कारण ही संभव हो सका था।

भारतीय सन्दर्भ में भी यह बात सटीक बैठती है; भारत में पत्रकारिता की शुरूआत शिक्षित—अग्रणी वर्ग ने की जिसका उद्देश्य पत्रकारिता के माध्यम से भारत को एक आधुनिक समाज व राष्ट्र के रूप में संगठित करना था। इसलिए स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता का इतिहास देश के राजनीतिक —सामाजिक इतिहास से अविच्छिन्न रूप से संबद्ध रहा है। पत्रकारिता ने राष्ट्र की जीवन धारा को गहराई से प्रभावित किया और उसे एक निश्चित दिशा दी। इस सन्दर्भ में भारतीय भाषाओं के अखबारों का विशेष महत्व है क्योकि इन अखबारों ने जनता से उसी की भाषा में संवाद स्थापित किया।

1921 में गठित भारतीय प्रेस लॅा कमेटी के सदस्य श्री शेषगिरी अय्यर ने भाषायी पत्रकारिता के महत्व को संदर्भित करते हुए कहा था कि इन समाचार पत्रो ने मात्र समाचारों के प्रसारण का कार्य ही नही किया अपितु जनमानस को एक विशिष्ट अन्तर्दृष्टि भी प्रदान की।

भारत में नवचेतना के प्रारंभिक संवाहक राजा राम मोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' व 'मिरातुल अखबार' के रूप में क्रमशः बाँग्ला व फारसी में अखबार शुरू किये तो उनका उद्देश्य बंगाल के जनमानस तक नवीन विचार पहुँचाना था। वस्तुतः भारत में पत्रकारिता प्रारम्भ से ही नवचेतना व आधुनिक भाव बोध से संबद्ध रही है। यह दिलचस्प है कि हिन्दी पत्रकारिता का उदय भी हिन्दी भाषी प्रदेशों में ना होकर बंगाल में हुआ जो कि भारत में नवजागरण व आधुनिकीकरण का केन्द्र था। हिन्दी का प्रथम अखबार 'उदन्त मार्तण्ड' 1826 में कलकता से प्रकाशित हुआ। 19 वी शताब्दी के अंत तक उत्तर भारत के हिन्दी प्रदेशों मे नियमित रूप से एक दर्जन हिन्दी अखबार निकल रहे थे।

**अन्य हिन्दी प्रदेशों की तुलना में राजस्थान में पत्रकारिता के विकास की गति धीमी थी, जहां अंग्रेजी सत्ता विदेशी होते हुए भी अपनी प्रवृत्ति में अर्द्धलोकतांत्रिक थी वहीं राजस्थान की रियासतों में मध्यकालीन सामन्ती वातावरण था जहां नागरिक अधिकारों का पूर्णतः अभाव था।** नागरिको को अभिव्यक्ति व लेखन की स्वतंत्रता नही थी, रियासतो के शासक स्वतंत्र विचारो के इतने विरोधी थे कि टाईपराईटर रखने के लिए भी लाईसेन्स की आवश्कता होती थी। प्रारम्भ में राजस्थान में जिस पत्रकारिता का प्रारम्भ हुआ वह मुख्यतः सरकारी सूचना प्रधान पत्रकारिता थी। गजेट या गजेटियर के नाम से ऐसे पत्र 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लगभग सभी प्रमुख रियासतों से प्रकाशित किए जाने लगे। इनमें **मारवाड़ गजट, जयपुर गजट व उदयपुर गजट** लगभग एक साथ 1860—70 के मध्य प्रारम्भ हुए। चूंकि ये शासको के द्वारा छपवाये जाते थे अतएव जनता पर इनका प्रभाव नगण्य था।

राजस्थान में लोकोन्मुखी पत्रकारिता के विकास में अजमेर—मेरवाड़ा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अजमेर—मेरवाड़ा क्षेत्र 1817 की संधि के बाद प्रत्यक्षतः ब्रिटिश सत्ता के नियंत्रण में आ गया था। ब्रिटिश सत्ता के

प्रत्यक्षतः अधीन होने का परिणाम अजमेर में आधुनिक शिक्षा के विस्तार के रूप में सामने आया। 1844–45 में ही केकड़ी, भिनाय, रामसर व मसूदा में कंपनी सरकार ने मॉडल प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की थी। 1872 तक अजमेर में 18 सरकारी स्कूल थे और 1920–21 तक यह संख्या 292 हो गई थी। इस प्रकार 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक तक अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र में शिक्षित व आधुनिक दृष्टि से संपन्न नागरिकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

इस क्षेत्र में आधुनिक भावबोध बढ़ाने में आर्य समाज की भी महती भूमिका रही। 1883 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'परोपकारीणी सभा' की स्थापना की। इस सभा का मुख्य उद्देश्य सत्य और ज्ञान को बढ़ावा देना था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज ने उन्नीसवीं शताब्दी के नवें दशक में 'देश हितेषी' और 'परोपकारी' नामक दो पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया। इन पत्रों का मूल उद्देश्य सामाजिक धार्मिक जीवन से कुप्रथाओं का अंत करना तथा शिक्षा को बढ़ावा देना था।

1930 तक अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र प्रगतिशील मूल्यों का केन्द्र बन गया था। 1929 में अजमेर के ही एक प्रगतिशील वकील हरविलास शारदा के प्रयासों के फलस्वरूप ही केन्द्रीय असेम्बली ने शारदा एक्ट पास किया। 'शारदा एक्ट' का भारत के सामाजिक–आधुनिकीकरण में युगांतकारी महत्व है। इसके माध्यम से बाल विवाह की कुप्रथा पर प्रभावी अंकुश लगा।

अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र न केवल भौगोलिक रूप से 'राजपूताना' के केन्द्र में था वरन् सामाजिक राजनीतिक हलचलों का भी केन्द्र बिन्दु हो गया था। राजस्थान की विभिन्न देशी रियासतों के प्रगतिशील व विचारवान तत्व भी अजमेर से ही अपनी गतिविधियाँ संचालित करते थे। इन गतिविधियों का एक मुख्य घटक पत्रकारिता भी थी। राष्ट्रीय नेताओं की तर्ज पर राजस्थान के तत्कालीन अग्रणी समाज सुधारकों व राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने भी पत्रकारिता को आधुनिक चेतना के प्रसार का माध्यम बनाया। 1920 से 1947 के मध्य अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र से नियमित प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों की संख्या एक दर्जन से अधिक थी। प्रस्तावित शोध की कालावधि (1936–1947) में अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र से तरूण राजस्थान, आगीवाण, मीरां, त्यागभूमि व नवज्योति आदि समाचार पत्र नियमित प्रकाशित हो रहे थे।

तरूण राजस्थान, आगीवाण और नवज्योति जहां पूर्णतः राजनीतिक पत्र थे वहीं मीरां व त्यागभूमि में साहित्यिकता का पुट भी था। इन समस्त पत्रों ने तत्कालीन सामाजिक कुरूतियों पर कड़ा प्रहार किया और नवीन विचारों व प्रगतिशील मूल्यों को बढ़ावा देने में पुरजोर पहल की।

तत्कालीन समाचार पत्रों में नवज्योति इसलिए महत्वपूर्ण है कि अपने व्यापक कलेवर के कारण नवज्योति एक संपूर्ण आधुनिक अखबार था जो आजतक एक अक्षुण्ण परम्परा के रूप मे चला आ रहा है। राजस्थान सेवक मण्डल के तत्वाधान में 2 अक्टूबर 1936 को इसका पहला अंक प्रकाशित हुआ। शीघ्र ही नवज्योति अपने कवरेज व पहुँच की दृष्टि से एक राजस्थान–व्यापी समाचार पत्र बन गया। **यहाँ यह उल्लेखनीय है कि समकालीन राजस्थान के अन्य अखबार क्षेत्र विशेष तक सीमित थे जबकि नवज्योति सारे राजस्थान को न केवल कवर करता था वरन् सम्पूर्ण राजस्थान में प्रसारित भी होता था।** नवज्योति की पुरानी फाईलों को देखने से पता चलता है कि अखबार के संवाददाता राजस्थान के प्रमुख शहरों व कस्बों में मौजूद थे। एक दूसरे स्तर पर नवज्योति का अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह 1936 से आधुनिक राजस्थान के निर्माण तक का प्रमाणिक दस्तावेज उपलब्ध कराता है। नवज्योति के अजमेर स्थित प्रधान कार्यालय में 1936 से 1950 तक की समस्त फाईलें सुरक्षित हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि अगस्त 1942 से सितम्बर 1945 तक

नवज्योति के संपादक श्री दुर्गा प्रसाद चौधरी कारावास में थे और इन तीन वर्षो में इस अखबार का प्रकाशन बाधित रहा।

## उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध परियोजना में आधुनिक चेतना को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। **''एनसाईक्लोपीडिया सोशल साईन्स'' के अनुसार आधुनिक चेतना या आधुनिकता, बुद्धिवाद पर आधारित सोचने–समझने का ऐसा ढ़ंग है जो तर्क को प्रमुख मानता है; किसी कार्य या घटना के पीछे निश्चित कारण ढूँढता है और मानव समाज की निश्चित प्रगति पर विश्वास करता है।**

आधुनिक चेतना का उदय यूरोपिय समाज में माना जाता है जहाँ पुनर्जागरण के बाद आधुनिक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हुईं और 17वीं–18वीं शताब्दी के प्रबोधन एवं औधोगिकीकरण के बाद आधुनिकता राजनीतिक,सामाजिक व आर्थिक जीवन में दिखलायी देने लगी। इस प्रकार सामाजिक–आर्थिक व राजनीतिक दृष्टि से आधुनिकता के निश्चित आशय हैं। **सामाजिक दृष्टि से समानता व उदारता, आर्थिक दृष्टि से औधोगिकीकरण व राजनीतिक दृष्टि से उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था आधुनिकता का पर्याय है।**

भारत में आधुनिक चेतना का सूत्रपात पश्चिम से संपर्क के बाद हुआ। जब ब्रिटिश सत्ता ने प्रशासनिक व शैक्षणिक प्रणाली में बदलाव किए तो आधुनिक चेतना का उदय हुआ। भारत में आधुनिक चेतना का मूल संवाहक मध्यम वर्ग था। ब्रिटिश व्यवस्था में नये प्रकार के व्यवसायों व सरकारी नौकरियों का उदय हुआ, जैसे वकील, विश्वविद्यालयी शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी आदि। वस्तुतः इसी वर्ग ने भारत में आधुनिक चेतना का सूत्रपात किया।

प्रस्तावित शोध प्रबंध का उद्देश्य इस बात का अन्वेषण करना है कि 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में आधुनिकता के विभिन्न आयामों यथा–सामाजिक समानता, व्यक्तिवाद, उदारता, राष्ट्रीयता इत्यादि को बढ़ावा देने में समाचार पत्रों की क्या भूमिका रही।

20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में रियासतों में बँटा हुआ राजस्थान, भारत के ब्रिटिश शासित प्रदेशों की तुलना में सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से पिछड़ा हुआ था। दुर्भाग्य से राजस्थान में बंगाल, महाराष्ट्र, आदि की तरह बड़े पैमाने पर सामाजिक सुधार आंदोलन नहीं हुए। प्रस्तावित शोध का उद्देश्य उपर्युक्त कालखण्ड में राजस्थान में प्रैस की भूमिका की एक सामान्य पड़ताल करना है और इस दृष्टि से नवज्योति के योगदान की गहनता से समीक्षा करना है।

### परिकल्पना :–

नवज्योति की 1936 से 1942 तक की फाईलो के आधार पर, यह परिकल्पित किया जा सकता है कि राजस्थान में अखबारो की और विशेषकर नवज्योति की आधुनिक चेतना के निर्माण में अहम् भूमिका रही। आधुनिक चेतना के समस्त पहलुओं को इस अखबार ने स्वर दिया। चाहे वह रियासतो में उत्तरदायी शासन की मांग हो अथवा ब्रिटिश शासित क्षेत्रो में नागरिक अधिकारों की लड़ाई हो। इसी प्रकार विधवा विवाह समर्थन हो अथवा बाल विवाह विरोध।

फरवरी 1937 में नवज्योति ने खबरो व संपादकीय लेखो की श्रृंखला द्वारा कोटा क्षेत्र में विधवा महिलाओ की दुर्दशा को रेखांकित किया और त्रावणकोर राज्य की इसी आधार पर प्रशंसा की कि वहां विधवा विवाह को कानूनी रूप से वैध धोषित कर दिया गया है। इसी प्रकार 1940 में कई लेखो की श्रृंखला द्वारा बाल विवाह का विरोध किया गया। नवम्बर 1937 में 'पर्दा दिवस मनाईये' में नामक लेख द्वारा पर्दा प्रथा का पुरजोर विरोध किया गया।

आधुनिकता का महत्वपूर्ण वाहक शिक्षा है; यह जानकर नवज्योति ने शिक्षा के मध्यम से प्रोत्साहन को पत्रकारिता का महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया। 30 मार्च 1940 को छपे एक विस्तृत लेख में नवज्योति ने रियासतो से आग्रह किया कि वे आधुनिक शिक्षा के विस्तार के विशेष प्रयास करें। रीवा रियासत का उदाहरण देकर इस लेख में तकनीकी व व्यवसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया गया। वास्तव में यह लेख बहुत अग्रगामी था। इस लेख में इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई है कि तकनीकी शिक्षा के अभाव में राजस्थान औधोगिकीकरण में पिछड़ जायेगा।

राजनीतिक खबरो में भी नवज्योति की नीति लोकतांत्रिक व प्रतिनिधि शासन के समर्थन की थी। जब 1937 में अजमेर—मेरवाड़ा के चीफ कमीश्नर ने लोकतांत्रिक रूप से बनी अजमेर की म्युनिसिपल कमेटी को भंग कर दिया तो नवज्योति ने इसका तीव्र विरोध किया। नवज्योति ने सक्रिय रूप से मनोनीत समिति का विरोध किया और अन्ततः कमिश्नर को चुनाव की मांग स्वीकार करनी पड़ी।

आधुनिक चेतना का एक पहलू अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि संपन्न होना भी है। नवज्योति में यह बखूबी नजर आता है भारत की मुख्य भूमि से भी दूर राजस्थान से संचालित यह अखबार द्वितीय विश्व युद्व की मानवीय त्रासदी से परिचित था। नवज्योति ने अपने विभिन्न आलेखो में हिटलर की विस्तार वादी नीति की आलोचना की। यह उल्लेखनीय है कि हिटलर यूरोप में इग्लैड से लड़ रहा था परन्तु यह अखबार की संतुलित दृष्टि का परिणाम था कि वह प्रत्येक घटना को उचित परिप्रेक्ष्य में देख रहा था।

वस्तुत यही नवज्योति के आधुनिक दृष्टिकोण को प्रकट करता है जिसके माध्यम से नवज्योति ने राजस्थान के पाठक समुदाय को आधुनिक दृष्टि दी।

## साहित्य समीक्षा :—

दुर्भाग्य से राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता पर अभी बहुत गहन और सूक्ष्म अध्ययन नहीं हो सके हैं। राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास को पहली बार लिपिबद्व करने के दृष्टि से सबसे उल्लेखनीय प्रयत्न डॉ मनोहर प्रभाकर द्वारा किया गया। 'राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता' नामक उनका ग्रन्थ एक मात्र ग्रन्थ है जो किसी भी गवेषणात्मक अध्ययन के लिए आधारभूत मूल सामग्री स्रोतों से हमें परिचित कराता है। राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता के उदभव और विकास पर डॉ. महेन्द्र मधुप और डॉ. भॅवर सुराणा ने भी शोध कार्य किये हैं। हाल ही में डॉ. आदर्श शर्मा ने बीसवी शताब्दी के पूर्वाद्ध की राजस्थान की पत्रकारिता पर विवेचनात्मक कार्य किया है। ''जन जागरण और हिन्दी पत्रकारिता' नामक उनकी प्रकाशित पुस्तक में स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी पत्रकारिता के समस्त आयामो का विश्लेषण किया गया है। इन सभी प्रयत्नों का अपना महत्व है, किन्तु यह कहना असंगत न होगा कि कुल मिलाकर राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता पर अब तक जो कार्य हुए है, वे मुख्यतः सर्वेक्षणात्मक है। इन अध्ययनों में समाचार पत्रों की सामग्री का सामाजिक एवं राजनीतिक परिपेक्ष्य में

विश्लेषण प्रस्तुत करने का कोई प्रयत्न नही किया गया है। इसका मुख्य कारण पुराने समाचार पत्रों का दुर्लभ और दुष्प्राप्य होना है, जो दूरदराज के पुराने पुस्तकालयों और निजी संग्रहो में बड़ी कठिनाई से देखे जा सकते है।

## प्रविधि :—

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की मुख्य आधार सामग्री नवज्योति के 1936 से 1950 के अंक है जो अजमेर में नवज्योति के प्रधान कार्यालय में सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्त्रोत के रूप हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा संपादित 'त्याग भूमि' व श्री जगदीश माथुर द्वारा संपादित 'मीरा' भी तुलनात्मक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत सामग्री सिद्व होगी। इनके कुछ अंक अजमेर स्थित राजकीय अभिलेखागार में सुरक्षित हैं तथा संपूर्ण फाइल्स बीकानेर के मुख्य अभिलेखागार में सुरक्षित है। शोध की आाधारभूत सामग्री व स्त्रौत 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध राजस्थान से प्रकाशित समाचार पत्र हैं जिनकी फाइलें राज्य अभिलेखागार बीकानेर में सुरक्षित है। चूंकि प्रस्तावित शोध में नवज्योति को केन्द्र बनाया गया है अतएव नवज्योति के 1936—50 काल खण्ड की फाइलों का गहन अवलोकन व तत्कालीन अन्य समाचार पत्रों से नवज्योति की तुलना महत्वपूर्ण उपादन होगा। पत्रकारिता के प्रभाव की समीक्षा हेतु तत्कालीन रियासतो के दस्तावेजो व रिपोर्टो का अध्ययन भी एक महत्वपूर्ण उपादान होगा। इसी प्रकार अजमेर स्थित एजीजी के मूल दस्तावेज व रियासती क्षेत्रो की गुप्त रिपोर्ट का अध्ययन भी इस दृष्टि से आवश्यक होगा कि नवज्योति व अन्य समाचार पत्रों में उठाये गये मुद्दे कहाँ तक जनमानस को प्रभावित करने में सफल रहे।

# पाठ योजना

1. भारत में पत्रकारिता की विकास यात्रा (अजमेर–मेरवाड़ा के विशेष संदर्भ में)

2. आधुनिक चेतना की आवधारणा एक ऐतिहासिक विवेचन

3. अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र में आधुनिकता के सामाजिक–राजनीतिक आयाम (क्षेत्र में आधुनिक शिक्षा, आर्य समाज और ईसाई मिशनरीयों की भूमिका)

4. समाचार व सम्पादकीय (सामग्री चयन के आधार पर तत्कालीन समाचार पत्रों की आधुनिक दृष्टि की विवेचना

5. नवज्योति व आधुनिक सामाजिक चेतना

6. नवज्योति व आधुनिक राजनीतिक चेतना

7. नवीन विचारों व ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में नवज्योति का योगदान

8. उपसंहार

## प्राथमिक स्त्रोतः

नवज्योति – 1936 से 1950 के अंको की फाईलें, नवज्योति कार्यालय, केसरगंज, अजमेर

त्यागभूमि – 1936 से 1950 के अंको की फाईलें, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर एवं हरिभाऊ उपाध्याय लाइब्रेरी, हटूण्डी, अजमेर।

मीरां – 1936 से 1950 के अंको की फाईलें, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

सज्जन कीर्ति सुधाकर – राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

परोपकारी – (माईको फिल्म) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

नवीन राजस्थान – राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

राजस्थान अभिलेखागार में संरक्षित समकालीन अन्य अखबारो की फाईलें

भारतीय प्रेस लॉ कमेटी रिपोर्ट–1921, राष्ट्रीय अभिलेखागार

## व्यक्तिगत और संगठनात्मक दस्तावेज

अ) दयानन्द वैदिक पुस्तकालय एवंम् शोध संस्थान, अजमेर

फाईलें – आर्य प्रतिनिधि सभा (1930 से 1950)

वार्षिक प्रतिवेदन (प्रकाशित)

परोपकारिणी सभा के वार्षिक प्रतिवेदन (1930 से 1950)

आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक प्रतिवेदन (1930 से 1950)

## राजकीय दस्तावेज –

अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

फोरन डिपार्टमेण्ट, सीक्रेट कन्सल्टेशन्स एण्ड प्रोसीडिंग्स

होम डिपार्टमेण्ट, पोलिटिकल ब्रांच

ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार रिकार्ड शाखा, जयपुर

राजपूताना रेजीडेंसी रिकार्ड्स

स)　　नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, तीन मूर्ति, नई दिल्ली

चांदकरण शारदा रिकार्ड्स,

प्रांतीय हिन्दू सभा, राजस्थान रिकार्ड्स

प्रजा मण्डल फाईलें

सलेक्शन्स ऑफ नेटिव न्यूज पेपर्स

द)　　राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर

अजमेर कमिश्नर सीक्रेट, कान्फीडेंशियल रिकार्ड्स, 1900–1950 ई.

अजमेर–मेरवाड़ा पोलिटिकल कान्फीडेंशियल, मिसलेनियस रिकार्ड्स

शिक्षा विभाग अजमेर–मेरवाड़ा 1900–1947 ई. के दस्तावेज

राजपूताना एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट, अजमेर–मेरवाड़ा 1900–1947 ई.

## गजेटियर्स, गजट (प्रकाशित) एवमं रिकॉर्ड्स

राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, 1966 ई.

मेवाड़ राज गजट, 1939, 1940 ई.

अलवर राज गजट, 1928 ई.

गवर्नमेन्ट ऑफ जयपुर एक्ट, 1944, सिटी पैलेस पुस्तकालय

## <u>सहायक ग्रंथ –</u>


अनुजा, मंगला : भारतीय पत्रकारिता नींव के पत्थर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 1996

अग्रवाल, हरिप्रसाद : आजादी के दीवाने, ब्यावर, 1953

ईश्वरी प्रसाद एवं सूबेदार, एस.के. : ए हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इण्डिया, द इण्डियन प्रैस लिमिटेड, इलाहबाद, 1951

उपाध्याय, हरिभाऊ : पुण्य स्मरण, इन्दौर, 1950

औझा, गौरी शंकर हीराचंद : उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1931

कमल, के. एल. : स्पॉट लाइट ऑन राजस्थान पॉलिटिक्स (अलवर एंड जयपुर), 1967

काला, गुलाब चन्द्र : राजस्थान परिचय ग्रंथ प्रकाशन, जयभूमि कार्यालय, जयपुर, 1954

गहलोत, सुखवीर सिंह : राजस्थान का संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर, 1969

गहलोत, जगदीश सिंह : राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1937

गहलोत, जगदीश सिंह : राजपूताने का इतिहास भाग–3, जयपुर राज्य का इतिहास हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर,, 1996

गोगानीया, अरूणा : रोल ऑफ प्रेस इन सोशियल पॉलिटिकल रिफार्म इन राजस्थान(1850–1947), आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2012

गौड़, हरप्रकाश : सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण, नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली 1983

चाहदगर पी. एल. : इण्डियन प्रिन्सेज अण्डर ब्रिटिश प्रोटेक्शन, लंदन, 1929

चौधरी, पी.एस. : राजस्थान बिटविन द टु वर्ल्ड वार, मेहरा ऑफसैट प्रेस, आगरा, 1968

चौधरी, रामनारायण : आधुनिक राजस्थान का उत्थान, राजस्थान प्रकाशन मण्डल, अजमेर, 1967

चौधरी, रामनारायण : बीसवी सदी का राजस्थान, अजमेर, 1980

जोशी, राजेन्द्र : उन्नीसवीं ताब्दी का अजमेर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972

जोशी, बी.बी. : हिन्दी पत्रिकाओं में राष्ट्रीय काव्य चेतना, समृद्धि, प्रकाशन, इलाहाबाद 1988

जैन, एम.एस. : राजस्थान थ्रू द एजेज, वोल्यूम III, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, 1997

जैन, एम.एस. : आधुनिक भारत का इतिहास, वाइली ईस्टर्न लिमिटेड, 1975

टॉड, जेम्स : एनल्स एंड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान, वोल्यूम II, के.एम. पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1971

तिवारी, अर्जुन : हिन्दी पत्रकारिता का वृहद विकास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977

तिवारी, अर्जुन : पत्रकारिता एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1999

पाण्डे, डॉ. पद्माकर : हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणासी 1993

दिवाकर, बी.एम. : राजस्थान का इतिहास, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1972

दुबे, राजीव : हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आन्दोलन, सत्येन्द्र प्रकाशन, इलाहाबाद 1988

नेहरू, जवाहरलाल : हिन्दुस्तान की कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1947

नृसिंह दास : राजस्थान की पुकार, राजस्थान पब्लिशिंग हाउस, अजमेर

पानीकर, के.एम. : रिलेशन ऑफ दी इण्डियन स्टेट्स विथ द गोवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, 1927

प्रभाकर, मनोहर : राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1981

पन्त, एन.सी. : हिन्दी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2002

प्रभाकर, मनोहर : रोल ऑफ राजस्थान प्रेस, डी.पी.आर. राजस्थान सरकार, 1985

ब्रुक, जे.सी. : पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ द स्टेट ऑफ जयपुर, कलकत्ता, 1868

बनर्जी, अनिल चन्द्र : द राजपूत स्टेट और द ईस्ट इण्डिया कम्पनी, मुखर्जी एण्ड कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता, 1951

बनर्जी, ए.सी. : लेक्चर्स ऑन राजपूत हिस्ट्री, कलकत्ता, 1962

बोलिया, लक्ष्मण : राजस्थान पत्रकारिता और विकास, राजस्थान समाचार पत्र, चौम हाऊस जयपुर 2001

भट्टाचार्य, सुकुमार : द राजपूत स्टेट एण्ड इ ईस्ट इण्डिया कंपनी, मुंशीराम मनोहरलाल नई दिल्ली 1972

भानावत, संजीव, : पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2000

भटनागर, राम रतन : राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ हिन्दी जर्नलिस्म (1820–1945), इलाहबाद, 1971

मधुप, महेन्द्र : जयपुर की पत्र पत्रिकाओं का स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान, सम्प्रेषण फोरम, जयपुर, 1970

मिश्र, कृष्ण बिहारी : पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

मेहता, पृथ्वीसिंह : हमारा राजस्थान, हिन्दी भवन, जालंधर और इलाहाबाद, 1950

मुंशी, ज्वाला सहाय : लॉयल राजपूताना, इलाहबाद, 1902

मैनन, वी.पी. : द ट्रांसफर ऑफ पावर इन इण्डिया, ओरियन्ट लांगमैन लिमिटेड, 1968

मिश्र, बलदेव प्रसाद : राजस्थान का इतिहास, दूसरा भाग, खेमराज श्री कृष्ण दास, 1925

राय, सुजाता : हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय जागरण, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली, 1992

रंजन, राहुल : उन्नीसवीं शताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता में सामाजिक चेतना, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली

रेउ, विश्वेश्वरनाथ : मारवाड़ का इतिहास, भाग 1 और 2 गवर्नमेन्ट प्रैस, जोधपुर, 1938

राव, बी. शिवा : इण्डियन फ्रीडम मूवमेन्ट, ओरियन्ट लॉगमैन, 1972

वाचेपयी, अम्बिका प्रसाद : समाचार पत्रों का इतिहास, ज्ञान मण्डल लि., बनारस, 1953

सक्सेना, के.एस. : द पॉलिटिकल मूवमेन्ट इन राजस्थान (1857–1947), एस.चांद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1972

सक्सेना, शंकर सहाय : क्रांतिकारी विजयसिंह पथिक, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, 1963

सिंह रघुवीर : पूर्व आधुनिक राजस्थान 1951, मंत्री साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर

सिमन, रिचर्ड : द कांग्रेस पार्टी इन राजस्थान, युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रैस, 1972

श्यामल दास : वीर विनोद, भाग 3, राज यंत्रालय, उदयपुर, 1886

शर्मा, आदर्श : जन जागरण और हिदी पत्रकारिता, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 1993

शर्मा, गोपीनाथ : राजस्थान का इतिहास प्रथम भाग, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा

शर्मा, गोपीनाथ : ऐतिहासिक निबन्ध राजस्थान, दिल्ली साहित्य मन्दिर मेडता द्वारा जोधपुर, 1970

शर्मा, गोपीनाथ : राजस्थान स्टडीज, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 1970

शर्मा, मथुरालाल : कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2, कोटा प्रिटिंग प्रेस कोटा, 1939

शर्मा, हनुमान : जयपुर का इतिहास, पहला भाग कृणा कार्यालय, जयपुर, 1934